

नैन तारे की (९२)

वाधाई वाधाई जनम साई प्यारे की।
दासनि आधार प्रभू जीअ जियारे की॥

अमर पुरी से ऊंचा मीरपुर धाम है
जहां प्रघट्ट भए प्रेमी सियाराम है
सुखदेवी शिशु रोचल नैन तारे की॥

अमां के आनंद का आर नहीं पार है
शशी से सुन्दर यह सुवन सुकुमार है
गगन में धुनि भई दुदंभी नगारे की॥

गगन में पूर्ण चंद्र यहां मैगसि चंद्र है
नभ के चंद्र से भी बख़त बुलंद है
जहां तहां जै जै रघुवंश दुलारे की॥

प्रेम मगनु गावें सब नर नारी
नाम धुनि सुनि करे कुंअर किलकारी
बलहारी कहे मैया सुवन सचारे की॥

कलियुग को सतियुग बनाने वाले आए हैं
श्री राम कृष्ण प्रेम पाठ पढ़ाने आए हैं
हिंदु सिंधु कीरति है साईं सिंधु वारे की॥

जै बाबल साईं की नर नारी वाति है
कथा कीर्तन की स्वर्ण प्रभाति है
सुख निवास मंहि झांकी सतिसंग उज्यारे की॥